

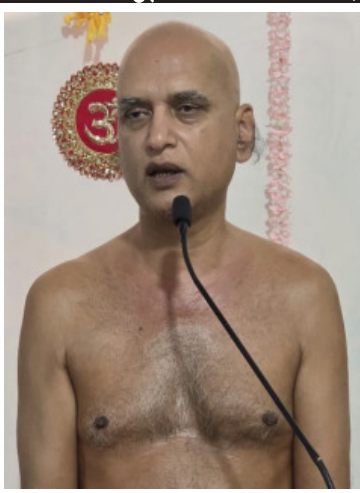


दैनिक समाचार पत्र

भारतार्थ खबर

खबर नहीं, उसका अर्थ

देश | समाज | राजनीति | अर्थव्यवस्था | शिक्षा | संस्कृति | दुनिया



2036 ओलंपिक की मेजबानी के लिए भारत की दावेदारी तेज, Rising Together विजन के साथ IOC के सामने प्रस्तुति



भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com
संवाददाता अशोक कुमार सिंह
नई दिल्ली, 7 अक्टूबर 2026। भारत

ने वर्ष 2036 के ओलंपिक और पैरालींपिक खेलों की मेजबानी की अपनी दावेदारी को आगे बढ़ाते हुए अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (IOC) के समक्ष प्रस्तुति की

तैयारी तेज कर दी है। भारत की प्रस्तावित दावेदारी का विजनRising Together रखा गया है, जबकि अहमदाबाद को प्रस्तावित मेजबान शहर के रूप में सामने रखा गया है। भारत की पहली औपचारिक प्रस्तुति अक्टूबर के अंत में IOC की Future Host Commission के समक्ष होने की उम्मीद है। यह प्रस्तुति मेजबानी की चयन प्रक्रिया में भारत के लिए महत्वपूर्ण चरण मानी जा रही है। युवाओं और खेल संस्कृति पर जोर भारत के खेल मंत्री मनसुख मांडविया और भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष पी.टी. उषा ने दावेदारी के विजन को सामने रखा है। Rising Together के तहत खेलों को युवाओं की व्यापक भागीदारी, स्वस्थ जीवनशैली, शिक्षा और रोजगार के अवसरों से जोड़ने पर जोर दिया गया है। भारत की योजना ओलंपिक जैसे वैश्विक प्रस्तावित मेजबान को अपनी खेल सीमित रखने के बजाय देश में खेल संस्कृति को मजबूत करने और युवाओं को खेलों से जोड़ने के व्यापक अवसर के रूप में प्रस्तुत करने की है। सात देश मेजबानी को दौड़

में2036 ओलंपिक की मेजबानी के लिए भारत के अलावा जर्मनी, हंगरी, कतर, दक्षिण कोरिया, दक्षिण अफ्रीका और तुर्किये भी प्रक्रिया में शामिल हैं। IOC की ओर से दावेदार देशों की आयोजन क्षमता, खेल सुविधाओं, खिलाड़ियों के अनुभव, वित्तीय व्यवस्था, सार्वजनिक एवं राजनीतिक समर्थन तथा आयोजन के बाद की दीर्घकालिक विरासत जैसे पहलुओं का आकलन किया जाएगा। भारत ने 2024 में 2036 ओलंपिक की मेजबानी में रुचि को लेकर IOC के समक्ष औपचारिक पहल की थी। अब अक्टूबर में प्रस्तावित प्रस्तुति दावेदारी को अगले चरण तक ले जाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। IOC की निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार 2036 ओलंपिक के मेजबान का चयन 2029 के मध्य तक किए जाने का प्रस्ताव है। ऐसे में आयोजन को केवल खेल प्रतियोगिता तक सीमित रखने के बजाय देश में खेल संस्कृति को मजबूत करने और युवाओं को खेलों से जोड़ने के व्यापक अवसर के रूप में प्रस्तुत करने की है। सात देश मेजबानी को दौड़

की दावेदारी को देश में खेल अवसरचना के विस्तार, अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं की मेजबानी और खिलाड़ियों के लिए बढ़ते निवेश की पृष्ठभूमि में देखा जा रहा है। ओलंपिक की मेजबानी भारत के लिए वैश्विक खेल आयोजन की क्षमता प्रदर्शित करने के साथ-साथ घरेलू खेल पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने का अवसर भी हो सकती है। Rising Together विजन के माध्यम से भारत का संदेश यह है कि ओलंपिक आयोजन का लाभ केवल खिलाड़ियों और खेल प्रशंसकों तक सीमित न रहे, बल्कि युवा शक्ति, शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और व्यापक सामाजिक विकास से भी जोड़ा जाए। हालांकि, मेजबानी हासिल करने की दौड़ अभी लंबी है और अंतिम निर्णय IOC की मूल्यांकन प्रक्रिया तथा सभी दावेदारों की योजनाओं के तुलनात्मक आकलन के बाद ही होगा। भारत के लिए आगामी प्रस्तुति अपनी दावेदारी की मजबूती और दृष्टिकोण को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना होगा। खेल शक्ति बनने की दिशा में बड़ा लक्ष्य भारत

सऊदी सुरक्षा पर पाकिस्तान-तुर्किये की बढ़ी भूमिका, मक्का रक्षा गठबंधन सक्रिय

भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com
रियाद, 7 अक्टूबर 2026। सऊदी अरब की सुरक्षा को लेकर सऊदी अरब, पाकिस्तान और तुर्किये के बीच बना मक्का रक्षा गठबंधन

अब सक्रिय चरण में पहुंचता दिखाई दे रहा है। 5 अक्टूबर को रियाद में हुई गठबंधन की आपात बैठक में तीनों देशों ने सामूहिक रक्षा संबंधी प्रतिबद्धताओं को तत्काल लागू करने तथा सऊदी अरब में सहमत सैन्य बलों और सैन्य क्षमताओं को तेजी से उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कदम उठाने पर सहमति जताई। बैठक में सऊदी अरब की सुरक्षा के सामने मौजूद चुनौतियों और हाल के हमलों पर चर्चा की गई। संयुक्त बयान में मक्का और मदीना को निशाना बनाने के प्रयासों तथा सऊदी अरब के शहरों और नागरिक एवं आर्थिक प्रतिष्ठानों पर हुए हमलों की निंदा की गई। सामूहिक रक्षा और सैन्य तैयारी पर जोर तीनों देशों के संयुक्त बयान के अनुसार गठबंधन का उद्देश्य सामूहिक सुरक्षा, सैन्य तैयारी और प्रतिरोध क्षमता को मजबूत करना है। इसके तहत सऊदी अरब में सहमत सैन्य



सैन्य सहयोग को तत्काल किसी एक विशेष युद्ध क्षेत्र में संयुक्त सैन्य अभियान की घोषणा के रूप में नहीं देखा जा सकता। अगस्त में हुआ था समझौता मक्का संयुक्त रक्षा समझौते पर 7 अगस्त 2026 को सऊदी अरब, पाकिस्तान और तुर्किये ने हस्ताक्षर किए थे। समझौते का उद्देश्य तीनों देशों के बीच सामूहिक रक्षा सहयोग को मजबूत करना है। इसके तहत किसी एक देश पर सशस्त्र हमला तीनों देशों की सामूहिक सुरक्षा के लिए खारेजे के रूप में देखा जाएगा। अब रियाद में हुई आपात बैठक के बाद समझौते को व्यावहारिक स्तर पर आगे

बढ़ाने के संकेत मिले हैं। इससे पश्चिम एशिया की बदलती सुरक्षा परिस्थितियों में तीनों देशों के बीच सैन्य समन्वय बढ़ने की संभावना है। पाकिस्तानी अधिकारी की महासचिव की जिम्मेदारी आपात बैठक में पाकिस्तान के सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल नौमान महमूद को मक्का रक्षा गठबंधन का पहला महासचिव नियुक्त करने का निर्णय लिया गया। उनका कार्यकाल तीन वर्ष का होगा। इस नियुक्ति को गठबंधन के संस्थागत ढांचे को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। महासचिव की भूमिका तीनों देशों के बीच रक्षा सहयोग और समन्वय को आगे बढ़ाने में अहम हो सकती है। क्या पाकिस्तान सीधे युद्ध में उतरा ? गठबंधन के सक्रिय होने के बावजूद फ़िन्हाल उपलब्ध आधिकारिक जानकारी में किसी विशेष युद्ध क्षेत्र में पाकिस्तानी या तुर्किये के सैनिकों के सीधे युद्ध में शामिल होने की घोषणा नहीं की गई है। आधिकारिक बयान में सैन्य बलों और क्षमताओं को सऊदी अरब में तेजी से उपलब्ध कराने की बात कही गई है। इसलिए इसे सीधे तौर पर पाकिस्तान युद्ध में उतर गया कहना तथ्यों से आगे बढ़कर निष्कर्ष निकालना होगा। वास्तविक सैन्य तैनाती का स्वरूप और उसका दायरा आने वाले समय में स्पष्ट हो सकता है।

सार्वजनिक नेतृत्व के 25 वर्ष पूरे, प्रधानमंत्री मोदी को केन्द्रीय मंत्रिमंडल की बधाई

भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com
संवाददाता अशोक कुमार सिंह
नई दिल्ली, 7 अक्टूबर 2026। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को सरकार

के प्रमुख के रूप में लगातार 25 वर्ष का नेतृत्व पुरा किया। उनकी यह यात्रा 7 अक्टूबर 2001 को गुजरात के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के साथ शुरू हुई थी। इसके बाद उन्होंने गुजरात में तीन लगातार कार्यकाल पूरे किए और 2014 से देश के प्रधानमंत्री के रूप में जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। इस महत्वपूर्ण पड़ाव के अवसर पर केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 6 अक्टूबर को प्रस्ताव पारित कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बधाई दी। मंत्रिमंडल के प्रस्ताव में उनके नेतृत्व को



राष्ट्र प्रथम और नागरिक प्रथम की भावना से जोड़ते हुए गुजरात से राष्ट्रीय स्तर तक की उनकी राजनीतिक और प्रशासनिक यात्रा का उल्लेख किया गया। गुजरात से राष्ट्रीय नेतृत्व तक का सफर केन्द्रीय मंत्रिमंडल के प्रस्ताव में गुजरात में मोदी के कार्यकाल के दौरान शुरू हुई विभिन्न पहलों और उनके राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार का उल्लेख किया

गया। प्रस्ताव में सुशासन, जनकल्याण, बुनियादी ढांचे, महिला सशक्तीकरण और आर्थिक विकास से जुड़ी पहलों को रेखांकित किया गया। केंद्र सरकार के अनुसार, जनधन योजना, पीएम-किसान, उल्लेख किया गया। मंदिर में पूजा-अर्चना अपने सार्वजनिक जीवन के 25 वर्ष पूरे होने के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने नई दिल्ली के सरोजिनी नगर स्थित श्री विनायक मंदिर में पूजा-अर्चना की। उन्होंने भगवान गणेश से देशवासियों के सुख, समृद्धि और कल्याण की कामना की। इस अवसर को प्रधानमंत्री के राजनीतिक जीवन में एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में देखा जा रहा है। 25 वर्ष की इस यात्रा में गुजरात के मुख्यमंत्री से लेकर लगातार तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बनने तक का राजनीतिक सफर शामिल है। आगे भी जारी रखने का संकल्प 25 वर्ष पूरे होने के अवसर पर प्रधानमंत्री ने सार्वजनिक सेवा और राष्ट्र निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। उनके नेतृत्व की आगामी प्राथमिकताओं में 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को आगे बढ़ाना प्रमुख रूप से सामने आया है। प्रधानमंत्री के 25 वर्ष के निरंतर सरकारी नेतृत्व को लेकर जहां केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने उनके कार्यकाल और उपलब्धियों को रेखांकित किया है, वहीं यह अवसर भारतीय राजनीति में दीर्घकालिक नेतृत्व की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

मौसम ने बदला मिजाज: दिल्ली-NCR समेत कई राज्यों में आंधी-बिजली का अलर्ट



भारतार्थ
खबरBhaaratarth.com

संवाददाता अशोक कुमार सिंह
नई दिल्ली, 7 अक्टूबर 2026। देश

के कई हिस्सों में मानसून की गतिविधियां अक्टूबर में भी बनी हुई हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने दिल्ली-NCR सहित उत्तर भारत के कई क्षेत्रों में गरज-चमक, आंधी और बिजली गिरने की संभावना को लेकर चेतावनी जारी की है। मौसम में अचानक बदलाव के चलते कई राज्यों में तापमान और स्थानीय मौसम परिस्थितियों में भी परिवर्तन देखने को मिल सकता है। उत्तर प्रदेश में आंधी और बिजली गिरने की संभावना मौसम विभाग के अनुसार पूर्वी और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 7 और 8 अक्टूबर को गरज-चमक के साथ आंधी तथा बिजली गिरने की संभावना है। दिल्ली, हरियाणा और चंडीगढ़ में भी इन दोनों दिनों के दौरान मौसम में बदलाव और गरज-चमक की स्थिति बनने का अनुमान है। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार ऐसे दौरान स्थानीय स्तर पर तेज हवाओं के साथ अचानक बारिश भी हो सकती है। इससे सामान्य जनजीवन, यातायात और खुले में होने

वाली गतिविधियों पर असर पड़ने की आशंका रहती है। दिल्ली-उत्तर में बादल और तापमान में बदलाव के संकेत दिल्ली-उत्तर में बुधवार को आंशिक रूप से बादल छाए रहने की संभावना है। मौसम में बदलाव के चलते तापमान में कुछ गिरावट आ सकती है। बारिश और तेज हवाओं का दौर लोगों को गर्मी और उमस से राहत दे सकता है। हालांकि, मौसम में अचानक बदलाव के दौरान नागरिकों को स्थानीय मौसम चेतावनियों पर नजर रखने और आवश्यक सावधानी बरतने की सलाह दी गई है। पहाड़ी राज्यों में बारिश के साथ बर्फबारी भी हो सकती है। उत्तराखंड में 7 और 8 अक्टूबर को गरज-चमक तथा तेज हवाओं को लेकर विशेष सतर्कता की जरूरत बताई गई है। पहाड़ी क्षेत्रों में मौसम तेजी से बदलने की स्थिति में यात्रियों और स्थानीय लोगों को प्रशासन तथा मौसम

विभाग की ओर से जारी दिशा-निर्देशों का पालन करने की सलाह दी गई है। दक्षिण और तापमान में बदलाव के संकेत दिल्ली-उत्तर में बुधवार को आंशिक रूप से बादल छाए रहने की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार तमिलनाडु, केरल और दक्षिण आंतरिक कर्नाटक में आने वाले दिनों में बारिश हो सकती है। इस बीच मौसम विभाग ने आंधी और बिजली गिरने के दौरान लोगों से खुले स्थानों, पेड़ों और कमजोर संरचनाओं से दूर रहने की अपील की है। विशेष रूप से बिजली चमकने के दौरान खुले मैदानों में रहने से बचने और स्थानीय प्रशासन की मौसम संबंधी चेतावनियों पर नजर रखने की सलाह दी गई है। अक्टूबर में बदलते मौसम का यह दौर कई राज्यों में बारिश और तापमान के स्वरूप को प्रभावित कर सकता है। ऐसे में नागरिकों के लिए मौसम संबंधी आधिकारिक अपडेट पर भरोसा करना और स्थानीय चेतावनियों के अनुरूप सावधानी बरतना महत्वपूर्ण होगा।

RBI का बड़ा फैसला: रेपो रेट 0.25 % बढ़ाकर 5.50 %, महंगाई पर कड़ा रुख

भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com
मुंबई, 7 अक्टूबर 2026। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने बुधवार को मौद्रिक नीति के मोर्चे पर बड़ा फैसला लेते हुए रेपो रेट में 25 बेसिस पॉइंट यानी 0.25 प्रतिशत की बढ़ोतरी की। इसके साथ ही रेपो रेट 5.25 प्रतिशत से बढ़कर 5.50 प्रतिशत हो गया है। यह फरवरी 2023 के बाद RBI की पहली रेपो रेट बढ़ोतरी है।

आर्थिक वृद्धि और आपूर्ति पक्ष से जुड़े जोखिमों के आधार पर तय किए जाएंगे। नीति रुख में बदलाव को बाजार ने भी

महंगाई के रुझान पर निर्भर करेगी। विकास दर का अनुमान बढ़ा। फहकने वित्त वर्ष 2026-27 के लिए वास्तविक GDP



महत्वपूर्ण संकेत के रूप में लिया है। विशेषज्ञों के अनुसार केलिब्रेटेड टाइमिंग का अर्थ निकट अवधि में ब्याज दरों में कटौती की संभावना कम होना है, जबकि आगे की कार्रवाई आर्थिक आंकड़ों और

वृद्धि का अनुमान 6.7 प्रतिशत से बढ़ाकर 7.1 प्रतिशत कर दिया है। वहीं, वित्त वर्ष के लिए CPI महंगाई का अनुमान बढ़ाकर 5.2 प्रतिशत किया गया है। इससे स्पष्ट है कि RBI एक ओर आर्थिक गतिविधियों की

मजबूती को लेकर आशावादी है, वहीं दूसरी ओर महंगाई के बढ़ते जोखिम को लेकर सतर्क भी है। कर्ज लेने वालों पर पड़ सकता है असर रेपो रेट बढ़ने का असर बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों की उधारी लागत पर पड़ सकता है। खासकर बाहरी बैंचमार्क से जुड़े फ्लोटिंग रेट वाले होम लोन और अन्य कर्जों की ब्याज दरों में बदलाव की संभावना रहती है। इससे कुछ कर्जदारों की एटकबढ़ सकती है या समान एटकबनाए रखने की स्थिति में ऋण की अवधि लंबी हो सकती है। बैंकों की ओर से ब्याज दरों में वास्तविक बदलाव कितना और कब होगा, यह प्रत्येक बैंक की फंडिंग लागत, ऋण उत्पाद और ब्याज दर रीसेट व्यवस्था पर निर्भर करेगा। इसलिए रेपो रेट में 25 बेसिस पॉइंट की बढ़ोतरी का असर हर कर्जदार पर समान रूप से पड़ना जरूरी नहीं है। RBI के इस फैसले से भारतीय मौद्रिक नीति में लंबे समय बाद सख्ती का संकेत मिला है। अब बाजार और आम कर्जदारों की नजर इस बात पर रहेगी कि आने वाले महीनों में महंगाई और वैश्विक उर्जा कीमतों का रुख क्या रहता है तथा फहक आगे की मौद्रिक नीति में किस दिशा में कदम उठाता है।

प्रियंका गांधी सड़क पर लेटीं, महुआ मोइत्रा का दावा पुलिस कर रही मारपीट और लाठीचार्ज

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरेगे ने बुधवार को राजधानी में विपक्षी सांसदों के साथ दोपहर 1 बजे लंच बैठक की। बैठक में राहुल गांधी, प्रियंका गांधी समेत विपक्ष के कई सांसद मौजूद रहे। इस बैठक में सांसद सीईसी ज्ञानेश कुमार से मुलाकात का समय मांगने वाली चिट्ठी पर हस्ताक्षर करने वाले हैं। यह बैठक छह अक्टूबर को चुनाव आयोग की ओर निकाले गए विपक्षी मार्च और प्रदर्शन के अगले दिन हुई। वहीं, राहुल गांधी के नेतृत्व में अब विपक्ष के सांसद जंतर-मंतर पर धरना देने जा रहे हैं।

'मेरे खिलाफ 45 एफआईआर, लक्ष्य 100 का'; राहुल बोले- हर एफआईआर मेरे लिए मेडल

नई दिल्ली (एजेंसी)। मल्लिकार्जुन खरेगे द्वारा अोजित विपक्षी सांसदों के साथ लंच के बाद राहुल गांधी ने जंतर-मंतर पर फिर प्रदर्शन का प्लान किया। उन्होंने ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग दोहराई और अपने खिलाफ दर्ज 45 एफआईआर पर कहा कि उनका लक्ष्य 100 एफआईआर का है। कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरेगे ने दिल्ली के जनस्थ स्थित सागर रत्न रेस्टोरेंट में इंडिया ब्लॉक के सांसदों के साथ लंच किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग के खिलाफ विपक्ष का प्रदर्शन जारी रहेगा। खरेगे

कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी बाड़ा ने कहा, श्रेय लोग चुनाव आयुक्त से मिलने की गुहार लगाए जाने के बाद सांसदों के साथ ऐसा बर्ताव करते हैं। वे हमारे साथ ऐसा बर्ताव करते हैं। वे सांसदों को पीट रहे हैं। पुलिसकर्मीयों ने मुझे जगह-जगह खरोंक दिया है। उन्होंने हमें जमीन पर पटक दिया है। अब हम यहां से नहीं हटेंगे। चाहे वे अपने बल वापस बुला लें, मैं यहां से नहीं हटूंगी। इंडिया ब्लॉक के प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस सांसद रेणुका चौधरी ने कहा, वे (केंद्र सरकार) गुंडागर्दी का सहारा ले रहे हैं। हम



ने कहा, आप देख सकते हैं कि दिल्ली पुलिस शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों के साथ कितनी क्रूरता से पेश आ रही है। ज्ञानेश कुमार को इस्तीफा देना होगा। हमारी गलती क्या है ? दिल्ली पुलिस द्वारा कार्यकर्ताओं और आम जनता के साथ इतनी बेरहमी से मारपीट और लाठीचार्ज क्यों किया जा रहा है ? सांसदों को जंतर-मंतर तक पहुंचने से क्यों रोका जा रहा है ? आखिर वहां क्या हो रहा है ? पुलिस ने जंतर-मंतर जाने से रोका, सड़क पर लेटकर प्रियंका गांधी का धरना शुरू इंडिया गठबंधन के सांसदों की बस से लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के साथ उतरते हुए कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी बाड़ा ने कहा, क्या यह कोई तरीका है ? आप देख सकते हैं कि ये लोग क्या कर रहे हैं।

अब वे जंतर-मंतर पर एक साथ बैठकर अपना विरोध दर्ज करायेंगे। राहुल गांधी का प्लान- जंतर-मंतर पर फिर होगा प्रदर्शन विपक्षी सांसदों के साथ लंच के बाद राहुल गांधी ने कहा कि करीब 300 सांसद मुख्य चुनाव आयुक्त से मिलना चाहते थे, लेकिन उन्हें वहां प्रदर्शन की अनुमति नहीं दी गई। अब विपक्षी सांसद तब प्रदर्शन स्थल जंतर-मंतर जाएंगे और वहां एक साथ प्रदर्शन करेंगे। राहुल गांधी ने कहा कि उनके लिए ज्ञानेश कुमार देश के वैध मुख्य चुनाव आयुक्त नहीं हैं।



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जरिए भी ऐसा करवाया

सम्पादकीय

मेरी दृष्टि में अटपट वाणी पुस्तक

कुंडलियां छंद मात्रिक छंद की एक संपूर्ण कविता है। वह छंद देहा एवं रोला के संयोग से बनता है।इसमें कुल छः चरण होते हैं।प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं।प्रथम दो पंक्तियाँ दोहे की होती हैं, बाकी चार पंक्तियाँ रोला छंद की होती हैं।इस छंद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि रचना जिस शब्द से शुरू होती है, उसी शब्द से उसका अंत होता है। प्राचीन काव्य-जगत में कुंडलिया छंद लिखने की परम्परा सर्वाधिक थी।माा छः पंक्तियों में रचनाकार अपनी किसी बात को आसानी से कहने में सक्षम होता है। कुंडलिया छंद की एक कुंडली अपने आप में एक सम्पूर्ण कविता होती है। इसी कुंडलिया छंद की प्राचीन लेखन परम्परा को आज भी अनेक रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से जीवंत बनाए हुए हैं। उन्हीं रचनाकारों में आजमगढ़ जनपद के हास्य-व्यंग्य के ख्यातिलब्ध रचनाकार हैं श्री शैलेंद्र



सम्पेलन के मंच से करते हैं तो उपस्थित श्रोता झूम उठते हैं। लोग स्वतः तालियाँ बजाये पर विवश हो जाते हैं। उनकी व्यंग्यात्मक शैली में परोड़े गई रचनाएँ सभी श्रोताओं का ध्यान निश्चित रूप से आकर्षित करती हैं। पिछले वर्ष 5 अक्टूबर 2025 को श्री अटपट जी द्वारा रचित पुस्तक **इअटपट वाणीर – कुंडलियों का संग्रह** का लोकार्पण हुआ। यह **इअटपट वाणीर** पुस्तक श्री अटपट जी की प्रथम पुस्तक है। इस पुस्तक में कुल 200 कुंडलियों का संग्रह है। यह पुस्तक मुंबई के प्रतिष्ठित प्रकाशन 'आर पब्लिकेशन' द्वारा प्रकाशित है। इस पुस्तक की भूमिका हिंदी साहित्य अकादमी से सम्मानित देश के जाने-माने साहित्यकार श्री पवन तिवारी जी द्वारा लिखी गई है। श्री अटपट एक संवेदनशील रचनाकार हैं। उन्होंने इस पुस्तक में कुंडलियों के माध्यम से अपनी सशक्त लेखनी का शानदार परिचय दिया है। भाषा की तरलता पाठक को आसानी से समझ में आ जाती है। हास्य-व्यंग्य के चुटुले अंदाज में कवि ने समाज का जो खाका खींचा है, निश्चित रूप से यह एक श्रमसाध्य कार्य है। कुंडलियों में हास्य है, मार्मिकता है, वीरता है, श्रृंगार है तथा संवेदनशीलता के साथ-साथ समाज के बिगड़े रूप का भी यथार्थ चित्रण है। पुस्तक में जीवन के विविध रूप दिखाई देते हैं। शैलेंद्र मोहन राय 'अटपट' जी सच को सच कहने में गुरेज नहीं करते, न तो शासन-सत्ता का डर, न ही लोगों का खौफ दिखता है उनकी लेखनी में। सदैव अपनी व्यंग्यात्मक शैली में सब कुछ कह जाते हैं। उनकी एक ऐसी ही कुंडली देखें- ज्ञानी जन यदि चाहते बचा रहे सम्मान। बिन मांगे मत दीजिए आप किसी को ज्ञान। आप किसी को ज्ञान न बाटे रखे सुश्रुति। इच्छुक जो जन होंव कीजिए उनको दक्षित। कह अटपट कविराय उरवरतो निज पानी। सौ सौ जूता खाय मानते खुद को ज्ञानी।। शेयर मार्फेट में गिरावट देश की अर्थव्यवस्था को कितना प्रभावित करती है, यह किसी से छिपा नहीं है। जब भारत के आर्थिक तंत्र पर श्री अटपट जी की निगाह पड़ती है तो वे अपने दारुण शब्दों में बोल उठते हैं- शेयर गिरता जा रहा निम्नटी हुआ धड़म। हलचल है बाजार में बुल का काम तमाम। बुल का काम तमाम सैरैया जाय लुट्कता। सेंसेक्स है बेहाल तेत दीये का चुकता। कह अटपट कविराय करे फेल संग गेयर। पहुंच रसातल गया बचा बेचारा शेयर।। धरती का सपुन छोड़ कर केरेंडे प्रुवांस। सुनीता विलियम ने रचा एक नया इतिहास। अंतरिक्ष की पूरी प्रमाणित महिमा न्यारी। कह अटपट कविराय रही आंखों में फिरती।। जीवित मुमको देख, खुशी से झुमी धरती।। अंग-प्रदर्शन से विकृत संस्कृति और बिगड़ समाज हमें किस गंत में ले जा रहा है, इस पर भी श्री अटपट जी नजर रखे हुए हैं और एक साहित्यकार का धर्म होता है कि अपने समाज को दरदल से बचने का भरपूर प्रयास करें। ऐसे समय में जब नई पीढ़ी जल्दी से वावरल होने की लफ्फाजी, रीलबाजी और नैपन को अपने जीवन में उतारे पर तुली है तो कवि-मन आहत होता है। तब श्री अटपट जी लिखते हैं- नंगापन है चम पर बिगड़ा जाव समाज। प्रचलन में लघु वस्त्र है, नहीं शैप है लाज। नहीं शैप है लाज, रील की लगी बीमारी। खुले आम कर रही, अंग प्रदर्शन नारी। कह अटपट कविराय, विचरती दूरी छप्पन। रही संस्कृत डुबय, बड़ रहा है नंगापन।। क्नों की अंधाधुंध कटाई से हमारे जीवन पर पड़ने वाले दुपरिणामों की तरफ कवि श्री अटपट ध्यान आकर्षित करते हैं। हमारी प्राण-वायु आज संकट में है। पर्वावरण का संकट विकट है। पर्यावरण रूपी रक्षक हमें निगलने को आतुर है। इसके जिम्मेदार हम स्वयं हैं। कवि की नजर जब नजर बनी पड़ती है तो वे पीड़ित होते हैं, पीड़ा के साथ-साथ उपाय भी सुझाते हैं। अधिक से अधिक पेड़ लगाने पर ही हमारा मंगल होगा, न कि पेड़ काटने पर। देखें एक कुंडली – जंगल काटे जा रहे, मंगल कैसे होय, बढ़ा प्रदूषण धरा पर रहा आदमी रोय, रहा आदमी रोय, हुए बेघर पशु पक्षी, धन पा करके मस्त ,मले सुरती आरक्षि, कह अटपट कविराय, चाहते अगर सुमंगल, नए लगाओ पेड़, नए हल काटे जंगल।। साहित्य में राजनीति का हस्तक्षेप कितना खतरनाक है, साहित्य में गुंडावाजी, गोलबंदी एवं आत्मसुधता पर श्री अटपट जी लिखते हैं- थुको चाटो का चलन दिखता है चहुंओर, राजनीति साहित्य में है प्रकोप पुरजोर, है प्रकोप पुरजोर पवित बिन पेनो लोट्टा , सबको छोड़े छोट्टा, चल रहा सिक्का खोट्टा , कह अटपट कविराय, पार्थ मलाई काटो, सकल प्रयोजन सिद्ध, साधना थुको चाटो।

मतदाता सूची पर बढ़ता अविश्वास: चुनावी लोकतंत्र में भरोसा कैसे कायम रहे?

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com लोकतंत्र में मतदाता सूची के कवल नामों का सरकारी रिकॉर्ड नहीं होती। यह उस नागरिक के लोकतांत्रिक अधिकार का आधार है, जिसके माध्यम से वह अपनी सरकार चुनता है। इसलिए मतदाता सूची में किसी योग्य नागरिक का नाम छूटना, किसी अपात्र व्यक्ति का नाम बने रहना या सूची में बदलाव की प्रक्रिया को लेकर संदिह पैदा होना–तीनों ही स्थितियां गंभीर हैं। वर्तमान समय में मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को लेकर राजनीतिक विवाद और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर को लेकर विपक्ष के विरोध ने इस विषय को राष्ट्रीय बहस के केंद्र में ला दिया है। 7 अक्टूबर को दिल्ली में विपक्षी नेताओं ने चुनाव आयोग की ओर मार्च का प्रयास किया। प्रदर्शनकारियों ने मुख्य चुनाव आयुक्त के इसीफे और मतदाता सूची से जुड़ी कथित अनियमितताओं पर जवाब की मांग की। पुलिस ने कई नेताओं को हिरासत में लिया। चुनाव आयोग और भाजपा ने विपक्ष के आरोपों को खारिज किया है। ऐसे माहौल में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न किसी राजनीतिक दल के आरोप या प्रत्यारोप से आगे का है–क्या आम मतदाता को यह पूरा भरोसा है कि उसका नाम मतदाता सूची में सुरक्षित है, उसे हटया नहीं जाएगा और यदि कोई त्रुटि होती है तो उसे सुधारने का निष्पक्ष और आसान रास्ता उपलब्ध है? मतदाता सूची का शुद्धिकरण

25 वर्ष का मोदी नेतृत्व: उपलब्धियों के साथ जवाबदेही का भी मूल्यांकन जरूरी

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com लोकतंत्र में किसी राजनीतिक नेता का 25 वर्षों तक लगातार सरकार के प्रमुख के रूप में बने रहना सामान्य राजनीतिक घटना नहीं है। नरेंद्र मोदी ने 7 अक्टूबर 2001 को गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में सरकार का नेतृत्व संभाला था और 2014 से भारत के प्रधानमंत्री के रूप में लगातार कार्यरत हैं। इस प्रकार सार्वजनिक जीवन के शीर्ष पर उनकी यात्रा के 25 वर्ष पूरे होना भारतीय राजनीति और लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण पड़ाव है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भी इस अवसर पर उनके नेतृत्व और विभिन्न क्षेत्रों में सरकार की उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए प्रस्ताव पारित किया है। लेकिन 25 वर्ष को इस यात्रा को केवल उपलब्धियों की सूची या राजनीतिक प्रशंसा तक सीमित करना लोकतंत्र की व्यापक भावना के अनुरूप नहीं होगा। इतना लंबा सार्वजनिक जीवन अपने साथ उपलब्धियों के साथ-साथ सवालों, चुनौतियों और जवाबदेही का भी बड़ा दायित्व लेकर आता है। इसलिए इस अवसर का वास्तविक महत्व तभी है, जब मोदी के 25 वर्षों के नेतृत्व का मूल्यांकन उपलब्धियों, कमियों, नीतिगत परिणामों और भविष्य की चुनौतियों को भी साथ रखकर किया जाए। गुजरात से राष्ट्रीय स्तर तक मोदी के राजनीतिक नेतृत्व की शुरुआत ऐसे समय हुई जब गुजरात भूकंप की त्रासदी से उबर रहा था।

यह मिट्टी में नमी बनाए रखने और जलस्रोतों के लिए उपयोगी हो सकती है, तो कहीं कटाई के करीब पहुंच चुकी फसलों के लिए नुकसान का कारण बन सकती है। धान, दलहन, तिलहन, सब्जियां और बागवानी फसलों के लिए, अचानक बारिश और तेज हवाओं का, अलग-अलग असर पड़ सकता है। ऐसे में मौसम पूर्वानुमान को किसानों तक समय पर और स्थानीय भाषा में पहुंचाना जरूरी है। किसान को केवल यह बताना पर्याप्त नहीं कि बारिश होगी। उसे कुछ दिन पहले करने से समस्या का स्थायी समाधान नहीं होगा। जलनिकासी नेट वर्क की क्षमता, अतिरक्त मण, प्राकृतिक जलमार्गों की सुरक्षा, झीलों और तालाबों का संरक्षण तथा वर्षाजल के वैज्ञानिक प्रबंधन को शहरी नियोजन का हिस्सा बनाना होगा। बारिश को शहर के लिए आपदा बनने से रोकना प्रशासन की तैयारी की पहली कसौटी होनी चाहिए। किसान के लिए बारिश वरदान या कष्ट? कृषि क्षेत्र के लिए अक्टूबर की बारिश का प्रभाव क्षेत्र और फसल के अनुसार अलग-अलग हो सकता है। कहीं

राजनीतिक आरोप बताती है। ऐसे में सामान्य नागरिक के सामने दो अलग-अलग दावे हैं, लेकिन उनसे स्पष्ट और स्वतंत्र रूप से सत्यापित होने वाला तथ्य चाहिए। यहीं से चुनावी संस्थाओं की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। यदि किसी क्षेत्र में बड़ी संख्या में नाम हटे हैं तो यह सार्वजनिक रूप से बताया जाना चाहिए कि कितने नाम क्यों हटाए गए। कितने लोगों ने दावा किया, कितने नाम दोबारा जोड़े गए और कितने मामलों में अपील हुई–इन आंकड़ों को व्यवस्थित और आसानी से समझ आने वाले रूप में सार्वजनिक किया जाना चाहिए। इसी प्रकार यदि राजनीतिक दल किसी खास बूथ या क्षेत्र में अनियमितता का आरोप लगाते हैं, तो उन्हें भी बूथवार और दस्तावेजी प्रमाण प्रस्तुत करने चाहिए। लोकतंत्र में गंभीर आरोपों की जांच गंभीर प्रमाणों से ही हो सकती है। तकनीक पारदर्शिता बढ़ाए, रहस्य नहीं आज मतदाता सूची प्रबंधन में डिजिटल प्रणालियों और तकनीक की भूमिका बढ़ रही है। चुनाव आयोग ने ECINET प्रणाली की समीक्षा के लिए वरिष्ठ निर्वाचन अधिकारी की अध्यक्षता में समिति तथा IIT/IIIT के स्वतंत्र विशेषज्ञ को शामिल करने की बात कही है। यह स्वागत योग्य कदम है, लेकिन तकनीक पर भरोसा तभी बनेगा जब उसकी प्रक्रिया भी समझने योग्य हो। नागरिकों को यह जानने का अधिकार है।

होगा, जितना इन्हें आलोचनात्मक परीक्षण से बाहर रखना। अर्थव्यवस्था: गति के साथ रोजगार का सवाल मोदी सरकार के वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था का आकार बढ़ा है और वैश्विक आर्थिक मंच पर भारत का महत्व भी बढ़ा है। बुनियादी ढांचे पर बढ़ाई और वित्तीय संकटों को बहावा, डिजिटल अर्थव्यवस्था और स्टार्टअप आगे संस्कृति इसके महत्वपूर्ण पहलू हैं। लेकिन आर्थिक विकास का मूल्यांकन केवल GST या बड़े निवेश के आंकड़ों से नहीं होना चाहिए। असल प्रश्न यह है कि विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक किस हद तक पहुंचा है। युवाओं के लिए पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण रोजगार, छोटे कारोबारों की मजबूती, किसानों की आय, ग्रामीण मांग, महंगाई और मध्यम वर्ग की क्रयशक्ति जैसे प्रश्न आज भी नीति-निर्माताओं के सामने हैं। विकास की गति तभी सार्थक मानी जाएगी, जब उसके साथ रोजगार, आव और अवसरों का व्यापक विस्तार भी दिखाई दे। कल्याणकारी योजनाओं की अगली कसौटी पिछले वर्षों में करोड़ों परिवारों तक बैंक खाते, आवास, शौचालय, बिजली, पेयजल और अन्य योजनाओं की पहुंच बढ़ाने का दावा सरकार ने किया है। PM-KISAN सहित अनेक योजनाओं के माध्यम से प्रत्यक्ष सहायता पहुंचाई गई है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने नजरअंदाज करना भी उतना ही अनुचित

कि उनका नाम किस कारण से हटाया गया, कौन-सा दस्तावेज स्वीकार हुआ या अस्वीकार हुआ और सुधार के लिए किस अधिकारी के पास अपील की जा सकती है। तकनीकी व्यवस्था का उद्देश्य नागरिक और प्रशासन के बीच दूरी कम करना होना चाहिए, न कि उसे और जटिल बनाना। आम मतदाता को केंद्र में रखना होगा राजनीतिक दलों की लड़ाई के बीच सबसे अधिक चिंता उस नागरिक की होनी चाहिए जो न तो किसी दल का कार्यकर्ता है और न ही चुनावी बहस का विशेषज्ञ। वह केवल इतना चाहता है कि चुनाव के दिन उसका नाम सूची में हो और वह अपना वोट डाल सके। चुनाव आयोग की आधिकारिक व्यवस्था में मतदाता अपना नाम खोज सकता है, मतदाता सूची डाउनलोड कर सकता है, नए पंजीकरण के लिए Form-6 भर सकता है और नाम हटाने से संबंधित Form-7 तथा अन्य सेवाओं का उपयोग कर सकता है। आयोग ने अपील और शिकायत की व्यवस्था भी उपलब्ध कराई है। लेकिन ग्रामीण, गरीब, बुजुर्ग, प्रवासी श्रमिक और डिजिटल सुविधा से दूर नागरिकों के लिए केवल ऑनलाइन व्यवस्था पर्याप्त नहीं होगी। बूथ स्तर पर सहायता, स्थानीय भाषा में जानकारी और मानवीय संपर्क भी उतना ही आवश्यक है। चुनाव आयोग पर भरोसा लोकतंत्र की पूंजी है भारत का निर्वाचन आयोग एक सवैधानिक संस्था है। उसकी

विश्वसनीयता किसी एक सरकार, दल या चुनाव तक सीमित नहीं है। आज सत्ता में कोई और दल हो सकता है, कल कोई दूसरा दल सत्ता में आ सकता है; लेकिन चुनाव आयोग की संस्थागत विश्वसनीयता बनी रहनी चाहिए। इसीलिए आयोग को आलोचना से बचने के बजाय आलोचना का तथ्यात्मक उत्तर देने की संस्कृति को और मजबूत करना चाहिए। वहीं राजनीतिक दलों को भी चुनाव आयोग की हर कार्रवाई को बिना प्रमाण पक्षपातपूर्ण बताते से बचना चाहिए। लोकतंत्र में संस्थाओं का आलोचना अधिकातर है, लेकिन संस्थाओं पर जनता का विश्वास कमजोर करना गंभीर जिम्मेदारी भी होनी चाहिए और अन्याय के विरुद्ध है कि मानता है। संपादकीय दृष्टिकोण आज की मतदाता को सच्चाई जानने का विश्वसनीय रास्ता मिले। मतदाता सूची का शुद्धिकरण हो–लेकिन किसी पात्र मतदाता के अधिकार की कीमत पर नहीं। नाम हटाए जाएं–लेकिन स्पष्ट कारण और अपील का अवसर देकर। तकनीक का इस्तेमाल हो–लेकिन उसकी जांच और जवाबदेही भी सुनिश्चित हो। राजनीतिक दल सवाल उठाएं–लेकिन के साथ। और चुनाव आयोग जवाब दे–लेकिन आंकड़ों तथा दस्तावेजों के साथ। जरूरत पड़ने पर

संवेदनशील या विवादित क्षेत्रों में स्वतंत्र पर्यवेक्षण, बूथवार सार्वजनिक आंकड़े, समयबद्ध शिकायत निवारण और नागरिक संगठनों तथा राजनीतिक दलों के साथ संस्थागत संवाद जैसी व्यवस्थाओं पर भी विचार किया जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि चुनाव केवल मतदान मशीन तक सीमित प्रक्रिया नहीं है। चुनाव की विश्वसनीयता मतदाता सूची से शुरू होनी है और परिणाम घोषित होने तक जनता विश्वास पर टिकी रहती है। निष्कर्ष भारत का लोकतंत्र दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक प्रयोगों में से एक है। इसकी शक्ति केवल करोड़ों मतदाताओं की संख्या में नहीं, बल्कि इस विश्वास में है कि प्रत्येक योग्य नागरिक का वोट समान महत्व रखता है। आज मतदाता सूची को लेकर जो राजनीतिक विवाद सामने आया है, उसे केवल सत्ता और विपक्ष की लड़ाई बनाकर देखना उचित नहीं होगा। यह अवसर है कि चुनावी प्रक्रिया में पारदर्शिता, तकनीकी विश्वसनीयता, स्वतंत्र जांच और नागरिकों की शिकायतों के समाधान की व्यवस्था को और मजबूत किया जाए। लोकतंत्र में चुनाव जीतना महत्वपूर्ण है, लेकिन उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि चुनाव प्रक्रिया पर हारने वाला भी विश्वास करे और जीतने वाला भी। मतदाता सूची पर भरोसा कायम रखना इसलिए किसी एक दल या संस्था की नहीं, पूरे लोकतांत्रिक तंत्र की साझा जिम्मेदारी है।

मौसम का बदलता मिजाज: अक्टूबर की

बारिश क्या नई सामान्य स्थिति का संकेत है?

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com अक्टूबर को भारत में सामान्यतः मानसून की विदाई और मौसम के धीरे-धीरे बदलने का महौना माना जाता है। लेकिन इस वर्ष अक्टूबर के शुरुआती दिनों में देश के कई हिस्सों में बारिश, गरज-चमक, तेज हवाओं और पहाड़ी क्षेत्रों में वर्षा की सक्रि यता ने एक महत्वपूर्ण सवाल खड़ा किया है–क्या मौसम का पारंपरिक कैलेंडर बदल रहा है या हम सामान्य मौसमी संक्रमण के बीच कुछ असामान्य घटनाओं को अधिक महसूस कर रहे हैं? 7 अक्टूबर को भारत मौसम विज्ञान विभाग ने दिल्ली-हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड सहित कई क्षेत्रों में गरज-चमक और तेज हवाओं की चेतावनी जारी की है। उत्तराखंड में 8 और 9 अक्टूबर को भारी बारिश की संभावना भी बताई गई है। कटऊ के अनुसार देश के कुछ अन्य हिस्सों में भी गतिवर्धन को बारिश और आंधी की भीतिवर्धियां जारी रह सकती हैं। इसे केवल अक्टूबर की बारिश कहकर नजरअंदाज करना आसान हो

सकता है, लेकिन इसके प्रभावों को नजरअंदाज करना महंगा पड़ सकता है। मौसम बदलता है, लेकिन तैयारी क्यों नहीं? मौसम में बदलाव कोई नई घटना नहीं है। मानसून की वापसी के दौरान वातावरण में नमी, पश्चिमी विक्षोभ, स्थानीय मौसम प्रणालियां और तापमान में अंतर कई क्षेत्रों में बारिश और गरज-चमक पैदा कर सकते हैं। इसलिए अक्टूबर में बारिश होना अपने आप में जलवायु परिवर्तन का प्रमाण नहीं माना जा सकता। लेकिन दूसरी ओर, पिछले वर्षों में अत्यधिक वर्षा, कम समय में तेज बारिश, अचानक बाढ़, शहरी जलभराव और तेज आंधी जैसी घटनाओं ने मौसम के जोखिम को अधिक गंभीर बनाया है। भारत के लिए चुनौती केवल यह जानना नहीं है कि बारिश कब होगी, बल्कि यह समझना भी है कि कितनी बारिश कितने कम समय में होगी और उसका स्थानीय असर कितना बड़ा हो सकता है। यहीं मौसम विज्ञान और आपदा-प्रबंधन के बीच बेहतर तालमेल की आवश्यकता की सामने आती है। शहरों की जलनिकासी फिर परीक्षा में बारिश चाहे सामान्य हो

या असामान्य, महानगरों की कमजोर जलनिकासी व्यवस्था उसे संकट में बदल सकती है। सड़कों पर जलभराव, यातायात बाधित होना, बिजली आपूर्ति प्रभावित होना, पेड़ों का गिरना और निचले वातावरण में नमी, पश्चिमी विक्षोभ, स्थानीय मौसम प्रणालियां और तापमान में अंतर कई क्षेत्रों में बारिश और गरज-चमक पैदा कर सकते हैं। इसलिए अक्टूबर में बारिश होना अपने आप में जलवायु परिवर्तन का प्रमाण नहीं माना जा सकता। लेकिन दूसरी ओर, पिछले वर्षों में अत्यधिक वर्षा, कम समय में तेज बारिश, अचानक बाढ़, शहरी जलभराव और तेज आंधी जैसी घटनाओं ने मौसम के जोखिम को अधिक गंभीर बनाया है। भारत के लिए चुनौती केवल यह जानना नहीं है कि बारिश कब होगी, बल्कि यह समझना भी है कि कितनी बारिश कितने कम समय में होगी और उसका स्थानीय असर कितना बड़ा हो सकता है। यहीं मौसम विज्ञान और आपदा-प्रबंधन के बीच बेहतर तालमेल की आवश्यकता की सामने आती है। शहरों की जलनिकासी फिर परीक्षा में बारिश चाहे सामान्य हो

यह मिट्टी में नमी बनाए रखने और जलस्रोतों के लिए उपयोगी हो सकती है, तो कहीं कटाई के करीब पहुंच चुकी फसलों के लिए नुकसान का कारण बन सकती है। धान, दलहन, तिलहन, सब्जियां और बागवानी फसलों के लिए, अचानक बारिश और तेज हवाओं का, अलग-अलग असर पड़ सकता है। ऐसे में मौसम पूर्वानुमान को किसानों तक समय पर और स्थानीय भाषा में पहुंचाना जरूरी है। किसान को केवल यह बताना पर्याप्त नहीं कि बारिश होगी। उसे कुछ दिन पहले करने से समस्या का स्थायी समाधान नहीं होगा। जलनिकासी नेट वर्क की क्षमता, अतिरक्त मण, प्राकृतिक जलमार्गों की सुरक्षा, झीलों और तालाबों का संरक्षण तथा वर्षाजल के वैज्ञानिक प्रबंधन को शहरी नियोजन का हिस्सा बनाना होगा। बारिश को शहर के लिए आपदा बनने से रोकना प्रशासन की तैयारी की पहली कसौटी होनी चाहिए। किसान के लिए बारिश वरदान या कष्ट? कृषि क्षेत्र के लिए अक्टूबर की बारिश का प्रभाव क्षेत्र और फसल के अनुसार अलग-अलग हो सकता है। कहीं

टूटना गंभीर समस्याएं पैदा कर सकता है। कटऊने उत्तराखंड के लिए 8 और 9 अक्टूबर को भारी बारिश के साथ गरज-चमक की चेतावनी दी है। ऐसे में स्थानीय प्रशासन को केवल मौसम चेतावनी जारी करने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि संवेदनशील सड़कों, पुलों, ढलानों और गांवों की निगरानी भी बढ़ानी चाहिए। पहाड़ी क्षेत्रों में आपदा-प्रबंधन की सफलता का अर्थ राहत पहुंचाने से पहले जोखिम वाले क्षेत्र की पहचान और समय पर निकासी की क्षमता विकसित करना है। स्वास्थ्य पर भी पड़ता है मौसम का असर बारिश और तापमान में अचानक बदलाव का असर सार्वजनिक स्वास्थ्य पर भी पड़ सकता है। नमी बढ़ने से मच्छरजनित और जलजनित बीमारियों का जोखिम कुछ क्षेत्रों में बढ़ सकता है। दूसरी ओर, मौसम में अचानक ठंडक विशेषकर बुजुर्गों और कमजोर स्वास्थ्य वाले लोगों के लिए मैदानी क्षेत्रों से अलग होता है। भारी वर्षा के साथ भूस्खलन, सड़क अवरोध, नदियों और नालों में अचानक जलस्तर बढ़ना तथा दूरदराज के क्षेत्रों का संपर्क

आधारित निगरानी और स्थानीय स्तर पर जन-जागरूकता को अपनी तैयारी का हिस्सा बनाना चाहिए। क्या यह नई सामान्य स्थिति है? इस प्रश्न का उत्तर सावधानी से देना होगा। एक या कुछ दिनों की अक्टूबर बारिश को देखकर ही नई निष्कर्ष निकालना वैज्ञानिक रूप से उचित नहीं होगा कि देश का मौसम स्थायी रूप से बदल गया है। लेकिन लगातार बदलते वर्षा-पैटर्न, अत्यधिक मौसम घटनाओं और स्थानीय स्तर पर बढ़ते जोखिमों को देखते हुए प्रशासनिक क्षमता विकसित कर रहा है तथा दो सप्ताह तक के विस्तारित पूर्वानुमान और मौसमी दृष्टिकोण उपलब्ध कराता है। इसका अर्थ स्पष्ट है–मौसम बदल रहा हो या उसकी अनिश्चितता बढ़ रही हो, शासन को दोनों परिस्थितियों के लिए तैयार रहना होगा। संपादकीय दृष्टिकोण भारत को अब मौसम आधारित प्रतिक्रिया से आगे बढ़कर मौसम आधारित तैयारी की ओर जाना

होगा। शहरों में जलनिकासी की क्षमता बढ़े, प्राकृतिक जलमार्ग सुरक्षित रहें और निर्माण योजनाएं स्थानीय जलविज्ञान को ध्यान में रखकर बनाई जाएं। गांवों में किसानों तक सटीक और समयबद्ध मौसम सलाह पहुंचे। पहाड़ी क्षेत्रों में संवेदनशील इलाकों की निरंतर निगरानी हो। स्कूलों, अस्पतालों, बिजली विभाग, परिवहन व्यवस्था और स्थानीय प्रशासन के लिए मौसम आधारित आपदा-प्रोटोकॉल तैयार हों। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मौसम चेतावनी को प्रशासनिक फाइल का हिस्सा नहीं, बल्कि जनसुरक्षा का उपकरण बनाया जाए। आज तकनीक के माध्यम से मौसम संबंधी जानकारी सप्ताह तक के विस्तारित पूर्वानुमान और मौसमी दृष्टिकोण उपलब्ध कराता है। इसका अर्थ स्पष्ट है–मौसम बदल रहा हो या उसकी अनिश्चितता बढ़ रही हो, शासन को दोनों परिस्थितियों के लिए तैयार रहना होगा। संपादकीय दृष्टिकोण भारत को अब मौसम आधारित प्रतिक्रिया से आगे बढ़कर मौसम आधारित तैयारी की ओर जाना

नजरअंदाज करना भी समझदारी नहीं होगी। मौसम विज्ञान हमें चेतावनी दे सकता है, नुकसान कम करने की जिम्मेदारी शासन और समाज की संयुक्त है। बदलते मौसम की सबसे बड़ी चुनौती बारिश नहीं, अनिश्चितता के लिए हमारी तैयारी की कमी है। यदि शहर जलभराव से बचने की तैयारी करते हैं, किसान मौसम सूचना के आधार पर फसल प्रबंधन कर पाते हैं, पहाड़ी क्षेत्र समय रहते संवेदनशील इलाकों को सुरक्षित करते हैं और प्रशासन चेतावनी को तत्काल कार्रवाई में बदलता है, तो मौसम की मार को काफी हद तक कम किया जा सकता है। प्रकृति का मौसम हमारे नियंत्रण में नहीं है, लेकिन उसके प्रभाव से होने वाले नुकसान की सीमा काफी हद तक हमारी तैयारी के नियंत्रण में है। इसलिए अक्टूबर की बारिश को केवल मौसम की खबर नहीं, बल्कि हमारी शहरी व्यवस्था, कृषि नीति और आपदा-प्रबंधन की तैयारी की परीक्षा के रूप में देखना अधिक उचित होगा।

जिन दर्शन से सात तत्वों का बोध और सम्यक दर्शन की राह : वीरसागर जी महाराज



भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
बेंगलुरु , 7 अक्टूबर 2026।
बेंगलुरु, 7 अक्टूबर 2026।
जयनगर में विश्व हिंदू परिषद-बजरंग दल, बेंगलुरु महानगर गणेश उत्सव समिति तथा विजयनगर निवासी क्षेम-अभिवृद्धि संघ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हिंदू महा गणपति शोभायात्रा का विधिवत शुभारंभ किया गया। शोभायात्रा के प्रारंभ अवसर पर हिंदू ध्वज फहराया गया और उपस्थित श्रद्धालुओं एवं आयोजकों ने गणपति उत्सव के प्रति अपनी आस्था एवं उत्साह व्यक्त किया। शोभायात्रा के शुभारंभ अवसर पर बेली मठ के शिव रुद्र महास्वामी, हिंदू जागरण वेदिके के श्रीकांत शेठ्टी, पूर्व विधान परिषद सदस्य अश्वत्थ नारायण, समाजसेवी महेंद्र मुणोत, पूर्व पार्षद रविंद्र तथा क्षेम-अभिवृद्धि संघ के प्रमुख एम.एल. ध्वजारोहण के साथ शोभायात्रा को आगे बढ़ाया गया। इस

कहा कि वीतरागी भगवान के दर्शन केवल धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि आत्मा के शुद्ध स्वरूप को समझने और आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ने का माध्यम हैं। उन्होंने कहा कि जिनबिंब के दर्शन करते समय दृष्टि केवल प्रतिमा तक सीमित न रहकर उसके माध्यम से वीतराग भगवान के गुणों और आत्मा के वास्तविक स्वरूप पर केन्द्रित होनी चाहिए। मुनि श्री ने बताया कि आचार्य परंपरा में प्रतिपादित सूत्र तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यग्दर्शनं सम्यक दर्शन की मूल अवधारणा को स्पष्ट करता है। अर्थात् तत्वों के यथार्थ स्वरूप में श्रद्धा रखना ही सम्यक दर्शन है। भगवान की वीतराग प्रतिमा आत्मा को अपने शुद्ध स्वरूप की स्मृति दिलाने तथा राग-द्वेष से ऊपर उठने की प्रेरणा देने का माध्यम बन सकती है। सात तत्वों का किया क्रमबद्ध विवेचन

धर्मसभा में मुनि श्री ने जिन दर्शन के संदर्भ में जैन दर्शन के सात प्रमुख तत्वों—जीव, अजीव, आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष—का क्रमबद्ध विवेचन किया। उन्होंने कहा कि जीव तत्व चेतन आत्मा के स्वरूप का बोध कराता है। वीतराग भगवान की मुद्रा आत्मा में विद्यमान अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख और अनंत वीर्य जैसे तत्व के अंतर्गत कर्म पुत्रल सहित जड़ द्रव्यों का विवेचन आता है। मुनि श्री ने आश्रव और बंध को समझाते हुए कहा कि मन, वचन और काय की प्रवृत्तियों तथा क्रोध, मान, माया और लोभ जैसी कषायों के कारण कर्मों का प्रवाह और उनका आत्मा से संबंध स्थापित होता है। यही प्रक्रिया जीव को संसार के जन्म-मरण चक्र में बांधे रखती है। उन्होंने कहा कि नए कर्मों के

आगमन को रोकना संवर और पूर्व में बंधे कर्मों को तप, संयम तथा आत्मसाधना के माध्यम से क्षीण करना निर्जरा है। जब आत्मा समस्त कर्मों से मुक्त होकर अपने जगत् के प्रति सच्ची श्रद्धा और अपने की अक्स्थता प्राप्त होती है। हेय-उपादेय का विवेक जरूरी मुनि श्री वीरसागर जी महाराज ने कहा कि संसारी जीव की एक बड़ी विडंबना यह है कि वह कई बार हेय को उपादेय और उपादेय को हेय समझ लेता है। व्यक्ति संवर और निर्जरा की कामना तो करता है, लेकिन व्यवहार में राग-द्वेष, विषय और कषायों के प्रति आकर्षण बना रहता है। उन्होंने कहा कि भगवान के दर्शन के दौरान यदि श्रद्धालु के भीतर यह भाव जागृत हो कि वीतरागता का मार्ग ही कल्याण का मार्ग है और राग-द्वेष ही दुःख का कारण हैं, तो यह भाव सम्यक दर्शन

की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बन सकता है। मुनि श्री ने स्पष्ट किया कि सम्यक दर्शन के लिए केवल शास्त्रीय शब्दावली का ज्ञान पर्याप्त नहीं है। भगवान के वीतराग मार्ग के प्रति सच्ची श्रद्धा और अपने आचरण में विवेक का जागरण भी उतना ही महत्वपूर्ण है। जिन दर्शन में भावों की नवीनता पर जोर धर्मसभा में एक श्रद्धालु के प्रश्न का समाधान करते हुए मुनि श्री ने दैनिक धार्मिक क्रियाओं में भावनात्मक जागरूकता बनाए रखने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि लंबे समय तक किसी धार्मिक क्रिया के दिनचर्या का हिस्सा बन जाने पर उसमें पहले जैसी नवीनता अनुभव नहीं हो सकती। ऐसे में साधक को अपनी साधना में सजगता और सकारात्मक नवीनता लाने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने समय-समय पर नए

तीर्थ क्षेत्रों की वंदना, पूजन-जाप में सकारात्मक परिवर्तन तथा प्रतिकूल परिस्थितियों को आत्मचिंतन का अवसर बनाने की प्रेरणा दी। उनके अनुसार परिस्थितियां केवल परेशानी का कारण नहीं होतीं; उचित दृष्टिकोण के साथ उनका उपयोग आत्मचिंतन और भावों की निर्मलता के लिए किया जा सकता है। मुनि श्री ने कहा कि जिन दर्शन का वास्तविक उद्देश्य केवल भगवान की प्रतिमा को देखना नहीं, बल्कि उनके वीतराग स्वरूप से प्रेरणा लेकर स्वयं के भीतर राग-द्वेष को कम करने और शुद्ध आत्मस्वरूप की ओर बढ़ने का संकल्प जागृत करना है। यही दृष्टि जिन दर्शन को आत्मकल्याण की साधना का रूप प्रदान करती है। समाचार प्रेषक विपिन कुमार जैन, बेंगलुरु।

एआईटी प्रीमियर लीग में खिलाड़ियों ने दिखाया खेल कौशल, विजेता टीम सम्मानित

भारतार्थ खबरBhaarataarth.com
बेंगलुरु, 7 अक्टूबर 2026। अंबेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, नागरभावी द्वारा एआईटी प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने उत्साह और खेल भावना के साथ अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महेंद्र मुणोत उपस्थित रहे। उन्होंने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए खेलों को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, अनुशासन और टीम भावना के लिए महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने प्रतिभागी खिलाड़ियों के प्रदर्शन की सराहना करते हुए उन्ें निरंतर बेहतर करने के लिए प्रेरित किया। प्रतियोगिता के समापन अवसर पर विजेता टीम को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। पुरस्कार वितरण के दौरान खिलाड़ियों में विशेष उत्साह दिखाई दिया। आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों को खेल प्रतिभा प्रदर्शित करने के साथ स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और सामूहिक भावना का अवसर प्रदान करना रहा। प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ियों ने मैदान पर बेहतर प्रदर्शन के लिए पूरा जोर लगाया। आयोजकों ने प्रतियोगिता को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी प्रतिभागियों और संबंधित लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। समाचार प्रेषक उपेन्द्र कुमार, बेंगलुरु।

जयनगर में FIR विवाद पर BJP-JDS का पुलिस स्टेशन दौरा, कार्यकर्ताओं पर दर्ज केस वापस लेने की मांग

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
बेंगलुरु, 7 अक्टूबर 2026।
विजयनगर में विश्व हिंदू परिषद-बजरंग दल, बेंगलुरु महानगर गणेश उत्सव समिति तथा विजयनगर निवासी क्षेम-



अभिवृद्धि संघ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हिंदू महा गणपति शोभायात्रा का विधिवत शुभारंभ किया गया। शोभायात्रा के प्रारंभ अवसर पर हिंदू ध्वज फहराया गया और उपस्थित श्रद्धालुओं एवं आयोजकों ने गणपति उत्सव के प्रति अपनी आस्था एवं उत्साह व्यक्त किया। शोभायात्रा के शुभारंभ अवसर पर बेली मठ के शिव रुद्र महास्वामी, हिंदू जागरण वेदिके के श्रीकांत शेठ्टी, पूर्व विधान परिषद सदस्य अश्वत्थ नारायण, समाजसेवी महेंद्र मुणोत, पूर्व पार्षद रविंद्र तथा क्षेम-अभिवृद्धि संघ के प्रमुख एम.एल. ध्वजारोहण के साथ शोभायात्रा को आगे बढ़ाया गया। इस

अवसर पर गणपति उत्सव से जुड़े श्रद्धालुओं और स्थानीय नागरिकों में उत्साह का वातावरण रहा। आयोजकों ने बताया कि सामूहिक धार्मिक आयोजनों के माध्यम से

देखने को मिली। आयोजन से जुड़े पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को व्यवस्थित एवं सफल बनाने में सहयोग किया। बेंगलुरु में गणेश उत्सव

देखने को मिली। आयोजन से जुड़े पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को व्यवस्थित एवं सफल बनाने में सहयोग किया। बेंगलुरु में गणेश उत्सव

के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते रहे हैं। विजयनगर की इस शोभायात्रा ने भी क्षेत्र में उत्सवी माहौल को और व्यापक बनाया। समाचार प्रेषक उपेन्द्र कुमार, बेंगलुरु।

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
बेंगलुरु, 7 अक्टूबर 2026।

जयनगर विधानसभा क्षेत्र में मतदाता पहचान-पत्र के सत्यापन को लेकर भारतीय जनता पार्टी (BJP) कार्यकर्ताओं के खिलाफ दर्ज BJP को लेकर राजनीतिक विवाद गहरा गया है। BJP और जनता दल (सेक्युलर) यानी JDS के नेताओं ने जयनगर पुलिस स्टेशन पहुंचकर मामले में निष्पक्ष जांच और कथित झूठी BJPवापस लेने की मांग की। राममूर्ति के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने पुलिस अधिकारियों से मुलाकात कर अपनी आपत्ति दर्ज कराई और इस संबंध में लिखित अर्जी सौंपी। पुलिस कार्रवाई पर नेताओं ने जताई आपत्ति प्रतिनिधिमंडल में शामिल नेताओं ने आरोप लगाया कि मतदाता सूची के सत्यापन से जुड़े मामले में पुलिस ने एकतरफा कार्रवाई करते हुए इखट कार्यकर्ताओं के खिलाफ

मामला दर्ज किया। नेताओं ने कहा कि यदि किसी कार्यकर्ता की ओर से नियमों



का उल्लंघन हुआ है तो उसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए, लेकिन राजनीतिक दबाव या द्वेष के आधार पर कार्रवाई नहीं की जानी चाहिए। इस दौरान

गोविंदराजनगर विधानसभा क्षेत्र के नेता एवं जिला उपाध्यक्ष उमेश शेठ्टी, बेंगलुरु

गोविंदराजनगर विधानसभा क्षेत्र के नेता एवं जिला उपाध्यक्ष उमेश शेठ्टी, बेंगलुरु

हुप्लीकेट अथवा एक से अधिक स्थानों पर दर्ज मतदाताओं के नामों के सत्यापन के लिए कार्यकर्ताओं ने चुनाव प्रक्रिया के तहत फॉर्म-7 के माध्यम से आपत्तियां दर्ज कराई थीं। उनका आरोप है कि इस प्रक्रिया को राजनीतिक रंग देकर इखट कार्यकर्ताओं के खिलाफ FIR दर्ज की गई। इखट नेताओं ने कहा कि मतदाता सूची की शुद्धता और पात्रता पर आपत्ति दर्ज करना चुनावी प्रक्रिया का हिस्सा है। ऐसे मामलों में शिकायतों की तथ्यात्मक जांच के बाद ही किसी व्यक्ति के खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए। गोपनीयता को लेकर भी उठे सवाल प्रतिनिधिमंडल ने चुनाव अधिकारियों और पुलिस की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाए। नेताओं का आरोप है कि जिन आवेदनों को गोपनीय रखा जाना चाहिए था, उनकी जानकारी कथित तौर पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं तक पहुंचाई गई। इसके बाद इखट कार्यकर्ताओं के खिलाफ

सेवा ज्योति यात्रा का समापन, BJP नेताओं ने सेवा संकल्प को बताया जनहित का माध्यम

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
बेंगलुरु, 7 अक्टूबर 2026। भारतीय जनता पार्टी के सेवा संकल्प अभियान के तहत आयोजित सेवा ज्योति यात्रा का समापन समारोह बुधवार को डॉ. एम.सी. मोदी हॉस्पिटल रोड स्थित शंकर मठ के खेल मैदान में आयोजित किया गया। समारोह में भाजपा के वरिष्ठ नेताओं, जनप्रतिनिधियों, पार्टी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। समापन कार्यक्रम में इखट केंद्रीय संसदीय बोर्ड के सदस्य एवं पूर्व मुख्यमंत्री बी.एस. मोहन और तेजस्वी सूर्या, राज्यसभा सदस्य जगेश सहित कई प्रमुख नेता उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पूर्व उपमुख्यमंत्री डॉ. सी.एन. अश्वथ नारायण, पूर्व मंत्री सुरेश कुमार और गोपालैया, विधान परिषद सदस्य एस. रघु तथा बेंगलुरु साउथ जिला अध्यक्ष एवं जयनगर विधायक सी.के. राममूर्ति भी मौजूद रहे। इसके अलावा बेंगलुरु नॉर्थ जिला अध्यक्ष एस. हरीश, बेंगलुरु सेंट्रल जिला अध्यक्ष सप्तगिरी

गोड़ा, पूर्व विधायक एम.बी. लक्ष्मीनारायण और सेवा संकल्प अभियान से जुड़े स्टेट कोऑर्डिनेटर एस. दत्तात्री सहित पार्टी के विभिन्न

गोड़ा, पूर्व विधायक एम.बी. लक्ष्मीनारायण और सेवा संकल्प अभियान से जुड़े स्टेट कोऑर्डिनेटर एस. दत्तात्री सहित पार्टी के विभिन्न

गोड़ा, पूर्व विधायक एम.बी. लक्ष्मीनारायण और सेवा संकल्प अभियान से जुड़े स्टेट कोऑर्डिनेटर एस. दत्तात्री सहित पार्टी के विभिन्न

मेडिकल कॉलेज में पूर्व सांसद और गार्ड में नोकझोंक, अभद्रता का आरोप लगा धरने पर बैठे, प्रचारार्थ का एक्शन

कानपुर: कानपुर देहात मेडिकल कॉलेज में राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला के पति व पूर्व सांसद अनिल शुक्ला वारसी और अस्पताल के सुरक्षा गार्ड के बीच तीखी नोकझोंक हो गई। गुरुकुल के बच्चों का पर्चा बनवाने लाइन में लगे पूर्व सांसद ने गार्ड पर अभद्रता और गाली-गलौज का आरोप लगाते हुए अस्पताल परिसर में ही धरना शुरू कर दिया। कानपुर देहात में राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला के पति और पूर्व सांसद अनिल शुक्ला वारसी बुधवार सुबह करीब 10 बजे स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय पहुंचे। वह गुरुकुल के बच्चों का इलाज करने आए थे। पर्चा बनवाने के लिए लाइन में लगने के दौरान उनकी सुरक्षा गार्ड विदेश कुमार से नोकझोंक हो गई। पूर्व सांसद ने गार्ड और उसकी पत्नी पर अभद्रता करने और गाली देने का आरोप लगाया। इससे नाराज होकर वह अस्पताल परिसर में ही बैठ गए। घटना की जानकारी होते ही अस्पताल में अफरा-तफरी मच गई। पूर्व सांसद के बैठने की सूचना पर मेडिकल कॉलेज के प्रचारार्थ डॉ. अंबरीश कुमार, एसीएमओ एसएल वर्मा समेत अन्य अधिकारी मौके पर पहुंचे। गार्ड के खिलाफ कार्रवाई की मांग पर अड्डे पूर्व सांसद ने अस्पताल की व्यवस्थाओं को लेकर भी नाराजगी जताई। उनका आरोप था कि डॉक्टर समय से नहीं आते हैं और मरीजों को पर्चा बनवाने से लेकर इलाज तक के लिए घंटों लाइन में परेशान होना पड़ता है। उन्होंने अस्पताल में ममानी किए जाने का भी आरोप लगाया और संबंधित गार्ड के खिलाफ कार्रवाई की मांग पर अड्ड गए। मरीजों और तीमारदारों की जुट गई भीड़ वहाँ, सुरक्षा गार्ड का आरोप है कि पूर्व सांसद ने उसके साथ गालीगलौज की। दोनों पक्षों के बीच हुई नोकझोंक के बाद अस्पताल में मौजूद मरीजों और तीमारदारों की भीड़ मौके पर जुट गई।

3000 करोड़ की परियोजनाएं, लोकार्पण न होने से नहीं मिल रहा लाभ

कानपुर: कानपुर शहर में जनता को जाम से राहत दिलाने, बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने और उद्योग-व्यवसाय को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तैयार की गई करीब 2,950.51 करोड़ की प्रमुख विकास परियोजनाएं पूरी तरह प्रमुख तैयार हैं। हालांकि, आधिकारिक लोकार्पण की तारीख न तय होने और प्रशासनिक हीलाहवाली के कारण आम जनता को इनका लाभ नहीं मिल पा रहा है। कानपुर शहर में जाम से निजात दिलाने, इलाज से लेकर व्यवसाय को बढ़ावा देने वाली करीब 2950.51 करोड़ की परियोजनाओं में निर्माण कार्य पूरा हो चुका है पर अभी भी इनको लोकार्पण का इंतजार है। इस कारण आम जनता को इनका लाभ नहीं मिल पा रहा है। नौबस्ता तक मेट्रो संचालन के लिए ट्रायल पूरे होने के बाद सभी स्टेशनों में ड्यूटियां भी लगा दी गई हैं। कभी-कभी ट्रेन भी चला रहे हैं पर लाखों यात्रियों का यह सपना पूरा नहीं हो रहा है। इस मामले में सतारूट पार्टी को किरकिरी से बचाने के लिए मम्मूलो रोड़े अटकाते हुए बहाना बनाया जा रहा है। हालत



दावा कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन ने करीब 2700 करोड़ रुपये की लागत से सेंट्रल स्टेशन से 8.5 किलोमीटर दूर नौबस्ता तक मेट्रो स्ट का निर्माण छह महीने पहले पूरा किया। इसमें से सेंट्रल से ट्रांसपोर्टनगर तक तीन किलोमीटर सेक्शन भूमिगत है जिसमें झकरकटी और ट्रांसपोर्टनगर स्टेशन भी बने

हैं। नौबस्ता तक मेट्रो में सफर का सपना नहीं हो रहा पूरा उसके आगे जूही हमीरपुर रोड में स्वदेशी मिल के सामने से नौबस्ता तक 5.5 किलोमीटर लंबा एलिवेटेड सेक्शन है। इसमें

हैं। नौबस्ता तक मेट्रो में सफर का सपना नहीं हो रहा पूरा उसके आगे जूही हमीरपुर रोड में स्वदेशी मिल के सामने से नौबस्ता तक 5.5 किलोमीटर लंबा एलिवेटेड सेक्शन है। इसमें

ड्यूटियां भी लगा दी हैं। कभी-कभी ट्रेनें भी चला रहे हैं पर शहर के दक्षिणी क्षेत्र के लोग इन्हें आते-जाते ही देखने के लिए मजबूर हैं। उनका नौबस्ता तक मेट्रो में सफर का सपना पूरा नहीं हो रहा। कन्वेंशन सेंटर खा रहा धूल कानपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड (केएससीएल) ने व्यवसाय और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से चुनिंज में 96.17 करोड़ की लागत से कन्वेंशन सेंटर का निर्माण कराया। निर्माण पिछले साल पूरा हो गया था। केएससीएल ने इसे नगर निगम को हँडओवर कर दिया। नगर निगम ने इसके संचालन के लिए टेडर कराकर टेक्रेडर कंपनी से संचालन शुरू करने के लिए कायादेश भी तैयार कर लिया है। सिर्फ लोकार्पण की तारीख का इंतजार किया जा रहा है। संचालन शुरू होने पर इससे नगर निगम को हर साल करीब पांच करोड़ रुपये की आय होगी। मल्टीलेवल पार्किंग में लगा ताला केएससीएल ने कलेक्ट्रेट और इसके आसपास जाम से निजात दिलाने लिए 47.83 करोड़ रुपये से मल्टीलेवल पार्किंग बनवाई है।



वृंदावन में दर्दनाक हादसा: भूमिगत टंकी में जहरीली गैस की आशंका, 4 छात्रों की मौत



भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
मथुरा, 7 अक्टूबर 2026। उत्तर प्रदेश

के मथुरा जिले के वृंदावन में मंगलवार रात एक दर्दनाक हादसे में चार छात्रों की मौत हो गई, जबकि एक अन्य छात्र को अस्पताल

यूपी की मतदाता सूची में 16.18 लाख रहस्यमयी वोटर का दावा, CEO ने कहा—यह Form-6 आवेदनों की संख्या

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
लखनऊ, 7 अक्टूबर 2026। उत्तर प्रदेश की मतदाता सूची को लेकर एक बार फिर सवाल उठने लगे हैं। विशेष गहन पुनरीक्षण (रस्क) के दौरान करीब 16.18 लाख Form-6 आवेदन एकत्र किए जाने को लेकर एक रिपोर्ट में इन्हें मतदाता सूची में जोड़े गए रहस्यमयी वोटर के रूप में सवाल उठाया गया। मामले ने चुनावी पारदर्शिता और मतदाता सूची की विश्वसनीयता को लेकर बहस तेज कर दी है। हालांकि, उत्तर प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने इन आरोपों को खारिज करते हुए कहा है कि 16.18 लाख की संख्या नए जोड़े गए मतदाताओं की नहीं, बल्कि नाम जोड़ने के लिए प्राप्त Form-6 आवेदनों की है। CEO ने दावे को बताया गलत धारणा पर आधारित मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय के अनुसार, रस्कके गणना चरण में 27 अक्टूबर 2025 से 6 जनवरी 2026 के बीच बूथ लेवल अधिकारियों (BLO) ने घर-घर जाकर ऐसे पात्र नागरिकों से Form-6 प्राप्त किए, जिनके नाम 27 अक्टूबर 2025 को मौजूद मतदाता सूची में शामिल नहीं थे। निर्वाचन कार्यालय का कहना है कि इन नागरिकों के नाम उस समय की मतदाता सूची में नहीं होने के कारण उनकेलिए पहले से गणना प्रपत्र मुद्रित

हटने और बाद में नामों के पुनः शामिल होने की प्रक्रिया को किस तरह समझा जाए। हालांकि, इन दावों के जवाब में निर्वाचन कार्यालय ने कहा है कि आंकड़ों में कोई विसंगति नहीं है और समस्या आंकड़ों की व्याख्या को लेकर है। CEO ने स्क्रफ़ प्रक्रिया को कानून और भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप बताया है। कानून और नियमों के तहत डूंडू प्रक्रिया : CEO निर्वाचन कार्यालय के मुताबिक उत्तर प्रदेश में SIR का संचालन लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950, ने स्पष्ट किया कि 6 जनवरी 2026 को प्रारूप मतदाता सूची प्रकाशित होने के बाद दावा एवं आपति अवधि में प्राप्त Form-6 आवेदनों को नियमों के अनुसार Form-9 की सूची में शामिल किया गया और उन्हें CEO उत्तर प्रदेश की वेबसाइट पर प्रदर्शित किया गया। इसलिए निर्वाचन कार्यालय का तर्क है कि 16.18 लाख Form-6 को सीधे मतदाता सूची में जोड़े गए 16.18 लाख मतदाताओं के रूप में देखना प्रक्रिया की सही व्याख्या नहीं है। रिपोर्ट में पारदर्शिता पर उठाए गए सवाल दूसरी ओर, जिस रिपोर्ट से यह विवाद सामने आया, उसमें दावा किया गया कि रस्कके दौरान जमा किए गए 16.18 लाख Form-6 आवेदनों की विधानसभा क्षेत्रवार जानकारी और उनके निस्तारण की प्रक्रिया को लेकर पणोंत प्रकिया में दिखवाई देती। रिपोर्ट में यह भी सवाल उठाया गया कि प्रारूप सूची में बड़ी संख्या में नागरिक

पूरी प्रक्रिया स्पष्ट, सत्यापन योग्य और सार्वजनिक रूप से समझने योग्य होना आवश्यक है। एक ओर निर्वाचन कार्यालय का स्पष्टीकरण है कि 16.18 लाख का आंकड़ा प्राप्त Form-6 आवेदनों की है, जबकि दूसरी ओर रिपोर्ट ने इन आवेदनों के सार्वजनिक डेटा और प्रक्रिया को लेकर सवाल उठाए हैं। ऐसे में आंतिम निष्कर्ष तथ्यों और आधिकारिक आंकड़ों की विस्तृत जांच के आधार पर ही निकाला जाना उचित होगा। SIR को लेकर देश के अलग-अलग हिस्सों में चल रही बहस के बीच उत्तर प्रदेश का मामला मतदाता सूची में किसी भी तरह की गड़बड़ी की आशंका को दूर करने का सबसे प्रभावी तरीका यही होगा कि संबंधित आंकड़े, सत्यापन प्रक्रिया और दावों-आपत्तियों के निस्तारण की जानकारी अधिकतम संभव पारदर्शिता के साथ सार्वजनिक की जाए। लोकतंत्र में मतदाता का विश्वास केवल मताधिकार से नहीं, बल्कि इस भरोसे से भी जुड़ा है कि मतदाता सूची में उसका नाम सुरक्षित, सही और निष्पक्ष प्रक्रिया के तहत दर्ज है। इसलिए इस विवाद का समाधान आरोप-प्रत्यारोप से नहीं, बल्कि पारदर्शी आंकड़ों, स्वतंत्र सत्यापन और स्पष्ट सार्वजनिक जवाबदेही से होना चाहिए।

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
मुंबई, 7 अक्टूबर 2026। कमजोर मानसून, घटते जल भंडार और अल-नीनो के संभावित प्रभाव के बीच महाराष्ट्र सरकार ने जल संकट से निपटने के लिए एहतियाती कदम तेज कर दिए हैं। राज्य सरकार ने 16 अक्टूबर 2026 से सभी शहरी और ग्रामीण स्थानीय निकायों में न्यूनतम 10 प्रतिशत पानी की कटौती लागू करने के निर्देश दिए हैं। सरकार का कहना है कि इस कदम का उद्देश्य उपलब्ध जल भंडार का विवेकपूर्ण इस्तेमाल करते हुए आने वाले महीनों में पेयजल संकट की स्थिति से बचाव करना है। पेयजल को सर्वोच्च प्राथमिकता जल संसाधन मंत्री गिरीश महाजन के अनुसार, राज्य के जल संसाधन विभाग ने 31 अक्टूबर 2027 तक उपलब्ध पानी के उपयोग की बांधवार और उपयोगवार योजना तैयार की है। इसमें पेयजल की आवश्यकता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। सरकार ने महानगरपालिकाओं, नगरपालिकाओं और ग्राम पंचायतों को 16 अक्टूबर से कम से कम 10 प्रतिशत जल कटौती लागू करने को कहा है। साथ ही स्थानीय निकायों को पाइपलाइन में पानी के रिसाव

को रोकने के लिए विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए गए हैं। हर बांध में रहेगा आयातकालीन जल भंडार सरकार की योजना के तहत प्रत्येक बांध में उपलब्ध पानी का 10 प्रतिशत अतिरिक्त हिस्सा आयातकालीन उपयोग के लिए सुरक्षित रखने की व्यवस्था की जाएगी। जल भंडारण की गणना करते समय वाष्पीकरण, गंद जमा होने और अनधिकृत जल निकासी जैसे कारकों को भी ध्यान में रखा जाएगा। सरकार ने यह भी स्पष्ट किया है कि अत्यधिक आवश्यकता की स्थिति में तकनीकी आकलन के बाद बांधों के डेड स्टोरेज में उपलब्ध पानी के उपयोग पर विचार किया जा सकता है। 265 तालुकों में सूखे की गिराई महाराष्ट्र सरकार ने इस वर्ष राज्य के 265 तालुकों में सूखे की स्थिति घोषित की है। कम बारिश और जल उपलब्धता पर बढ़ते दबाव के बीच सरकार ने अगले मानसून तक पानी के प्रबंधन की तैयारी अभी से शुरू कर दी है। अधिकारियों के अनुसार, अल-नीनो के संभावित प्रभाव को देखते हुए जल संसाधनों के इस्तेमाल में अतिरिक्त सावधानी बरतना जरूरी है। उद्योगों को भी पानी बचाने के निर्देश जल संरक्षण योजना का असर उद्योगों पर भी

पड़ेगा। सरकार ने उद्योगों को अपने इस्तेमाल किए गए पानी में से कम से कम 30 प्रतिशत पानी का पुनः उपयोग या पुनर्चक्रण करने के निर्देश दिए हैं। स्थानीय निकायों को सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट पूरी क्षमता से चलाने तथा उपचारित पानी का इस्तेमाल बागवानी, निर्माण और सफाई जैसे कार्यों में करने के लिए कहा गया है। इससे इन कार्यों में पेयजल या ताजे पानी की खपत कम करने में मदद मिल सकती है। सिंचाई से पहले पेयजल और पशुओं की जरूरत सरकार की जल प्रबंधन योजना में कृषि के लिए भी प्राथमिकताएं तय की गई हैं। सिंचाई के लिए पानी छोड़ने से पहले पेयजल, पशुओं और चारे की आवश्यकताओं को पूरा किया जाएगा। इसके बाद रबी की खेती, नहरों और चारा के 265 तालुकों में सूखे की स्थिति घोषित की है। कम बारिश और जल उपलब्धता पर बढ़ते दबाव के बीच सरकार ने अगले मानसून तक पानी के प्रबंधन की तैयारी अभी से शुरू कर दी है। अधिकारियों के अनुसार, अल-नीनो के संभावित प्रभाव को देखते हुए जल संसाधनों के इस्तेमाल में अतिरिक्त सावधानी बरतना जरूरी है। उद्योगों को भी पानी बचाने के निर्देश जल संरक्षण योजना का असर उद्योगों पर भी

संकेत दिए हैं। जल संसाधन, राजस्व और पुलिस विभाग की संयुक्त टीमें निगरानी करेंगी तथा अवैध पंप और अन्य उपकरण जब्त करने की कार्रवाई की जा सकती है। चुनावी सिर्फ कटौती की नहीं, जल प्रबंधन की भी महारफ्त को 10 प्रतिशत पानी कटौती का फैसला केवल तत्काल जल बचत का उपाय नहीं है, बल्कि आने वाले महीनों के लिए जल उपलब्धता को संतुलित रखने की कोशिश भी है। सरकार के सामने एक ओर लोगों को पेयजल जरूरतें हैं, तो दूसरी ओर कृषि, पशुपालन और औद्योगिक गतिविधियों के लिए पानी की मांग भी बनी रहेगी। ऐसे में जल संरक्षण की जिम्मेदारी केवल सरकार और स्थानीय निकायों तक सीमित नहीं रह सकती। नागरिकों को भी पानी की योजना के आधार पर करनी होगी। आने वाले महीनों में बारिश, जलाशयों के स्तर और वास्तविक खपत के आधार पर स्थिति की समीक्षा महत्वपूर्ण होगी।

बाल कृष्ण की बाल लीलाओं ने मोहा मन, पंचम दिवस पर बच्चों की मनमोहक नाट्य प्रस्तुति

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

उत्तराखंड, 7 अक्टूबर 2026। राष्ट्रीय सनातनी संगठन ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित सर्व पितृ मोक्ष प्राप्ति 5 कुण्डीय महायज्ञ एवं श्रीमद् भागवत कथा के पंचम दिवस श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक वातावरण के बीच विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। कथा के दौरान श्रद्धेय व्यास जी ने भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का भावपूर्ण वर्णन किया, जिसे सुनकर उपस्थित श्रद्धालु भावविभोर नजर आए। पंचम दिवस के कार्यक्रम का विशेष आकर्षण छोटे-छोटे बच्चों द्वारा भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं पर आधारित नाट्य प्रस्तुति रही। बच्चों ने अपनी अभिनय क्षमता और भावपूर्ण प्रस्तुति के माध्यम से श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप तथा उनकी लीलाओं को मंच पर जीवंत करने का प्रयास किया। प्रस्तुति के दौरान कार्यक्रम स्थल पर मौजूद श्रद्धालुओं ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया और वातावरण भक्तिमय हो उठा। कार्यक्रम में पूज्य व्यास जी के पिता श्री देवेन्द्र सोनी की विशेष उपस्थिति रही। उनके साथ समाजसेवी एवं जन निर्माण पार्टी से जुड़े लोकेश कुमार सेनी, जिला पंचायत सदस्य श्रीमती कमलेश देवी तथा चौधरी रोहित भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। अतिथियों और श्रद्धालुओं ने कथा श्रवण के साथ बच्चों की प्रस्तुति का

आनंद लिया। पितृ अमावस्या पर 108 कुण्डीय महायज्ञ की घोषणा इस अवसर पर राष्ट्रीय सनातनी संगठन ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पंकज सेनी ने आगामी धार्मिक



आयोजन की जानकारी देते हुए बताया कि संगठन की ओर से पितृ अमावस्या के पावन अवसर पर उत्तराखंड में पहली बार सर्व पितृ मोक्ष प्राप्ति 108 कुण्डीय महायज्ञ आयोजित करने की योजना है। उन्होंने प्रस्तावित आयोजन को धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बताते हुए श्रद्धालुओं से इकट्ठी सहभागिता का आन किया। आयोजन से जुड़े पदाधिकारियों के अनुसार, महायज्ञ के माध्यम से श्रद्धालुओं को धार्मिक अनुष्ठान

दिवस भी कार्यक्रम स्थल पर श्रद्धालुओं की उपस्थिति और सहभागिता बनी रही। भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं के प्रसंगों के साथ बच्चों की नाट्य प्रस्तुति ने कार्यक्रम को विशेष आकर्षण प्रदान किया। आयोजन समिति की ओर से धार्मिक कार्यक्रमों को व्यवस्थित रूप से संपन्न करने तथा श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं किए जाने की जानकारी दी गई। पंचम दिवस का समापन भक्तिमय वातावरण में हुआ।